Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
September 2025
ISSN 2229-3388

हिन्दी और मलयालम नाटक

Dr. Salini
Associate Professor PG & Research Department of Hindi Government College for Women
Pincode – 695 014
Affiliated to University of Kerala
Email: Salusasidhar 651@gmail. Com

भारतीय नाटक के विकास में संस्कृत नाटकों का विशेष योगदान रहा है। भारत में नाटकों की परंपरा संस्कृत के नाटकों से ही शुरू होती है और उसके विकास का श्रेय कालिदास भवभूति आदि को है। जिन्होंने विषयवस्तु के चुनाव पात्रों के चरित्र-चित्रण आदि के द्वारा नयी लींक स्थापित की। उसके बाद लोकनाट्यों से भारतीय नाटकों का प्रारंभ होता है। रासलीला, रामलीला, यक्षगान सगान, पुतली, कठपुतली आदि के प्रदर्शन में नाटक के बीज बने रहे। इन लोकनाट्यों के विभिन्न रूप भारतीय भाषाओं में मिलते है। हिन्दी प्रदेश में रासलीला और रामलीला हो तो मलयालम में 'कूटीयाट्टम'। इन लोकनाधों का विषय पौराणिक कथाएँ थीं, जिसे संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था। संगीतात्मक नाटकों की लोकप्रियता देस्वक मलयालम में भी संगीत नाटक लिखे गए जिनमें सबसे अधिक सफलता मिली। वह नाटक का नाम है ''सदरामा''। नाटककार का नाम है - के.सी. केशवपिल्लै। उसके बाद श्री. विजय कृत करुणा, शाकुन्तलम, और अनारकली विख्यात हुए। ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर तोप्पिल भासी ने ऐसे संगीत नाटक लिखे जिसमें मिट्टी की गन्ध बसी है। भारतीय नाटक को संपन्न बनाने में थियोरेक्टिकल कँपनियों का योगदान भुलाया नहीं सकता। अंग्रज़ों के संपर्क में

आने पर षेकस्पियर के नाटकों का अनुवाद कर नाटक के रिक्त भण्डार को भरने का प्रयास किया गया। हिन्दी में भारतेन्दु ने शेक्सपियर के ड्डद्धड़ण्ड्डद्य दृढ ध्ड्डदत्ध्र का अनुवाद दुर्लभ बन्धु' नाम से किया। उसमें पात्रों के नामों का भी रूपान्तरण कर दिया गया है।

अनुवादों से मौलिक नाटक लेखन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। नाटकों के विषय थे - पौराणिक प्रसंग ऐतिहासिक महापुरुष। इनमें सामाजिक समस्याओं और विकृतियों पर प्रकाश डाला गया। महाभारत के आख्यानों यहाँ सावित्री सत्यवान, सुभदा हरण, अभिमन्यू वध, द्रौपदी वरन-हरण आदि नाटक लिखे गए। हिन्दी में प्रहलाद (श्रीनिवास दास), कर्ण (विष्णु गोविन्ध शर्मा) दमयन्ती स्वयंवर (बालकृष्ण भट्ट) आदि नाटकों ने नाट्य परंपरा को आगे बढ़ाया। प्रसाद, हरिकृष्ण प्रेमी आदि ने ऐतिहासिक नाटकों की रचना की।

१९ वीं शताब्दी के मध्य में सामाजिक बुराइयों, धार्मिक ढोंग तथा दम्भ पर प्रहार करते हुए हिन्दी तथा मलयालम के नाटककार सामने आये। मलयालम के नाटककारों ने टी.एल.राय से प्रभावित है। अपने नाटकों में एक ओर अन्धविश्वास तथा रूढिवादिता का विरोध करते हुए समाज सुधार की तीव्र आकांक्षा मुखरित की तो दूसरी और राष्ट्रप्रेम की भावना भी मुखरित है।

२० वीं शती के तीसरे या चौथे दशक में इस धारा के मलयालम नाटककार हैं - वी.टी. भट्टतिरिप्पाड, एम.पी. भट्टतिरिप्पाड और के दामोदरन आदि। सामाजिक समस्याओं का प्रभाव सी.जी. थाँमस के "अवन वीण्डुम वरुन्नू" नाटक में मिलता है। इसी धारा के अन्य नाटककारों के नाम इस प्रकार के हैं - गोविन्दन,

इडश्रेरी, एस.एल.पुरम, के.टी.मुहम्मद (करवट्ट पशु) तिक्कोडियन (जीवितम) मुहम्मद यूसूफ (कन्डम वेट्च कोट्ट) और सुरेन्द्रन (पलुंकु पात्रम) आदि। हिन्दी में यह स्वर भारतेन्दु युग के नाटककारों की कृतियों में हुआ। इस दृष्टि से भारतेन्दु द्वारा लिखे गए नाटक ''भारत दुर्दशा, भारत जननी, नीलदेवी और अन्धेर नगरी आदि उल्लेखनीय है। आगे चलकर जयशंकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों द्वारा राष्ट्रीयता की भावना को और अधिक प्रखर बनाया।

भारत की दुर्दशा के कारण केवल विदेशी साम्राज्यवाद नहीं तो बल्कि भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों धार्मिक अन्धविश्वास और थोथी परंपराएं भी थीं। इस बात को प्रबुद्ध भारतीय भी समझ गए थे। इसलिए हिन्दी और मलयालम के तत्कालीन नाटकों में पाठकों को एक ओर उन बुराइयों से लडने के लिए आह्वान किया गया और दूसरी ओर उसे दूर करने के साधनों का भी संकेत किया गया। दहेज, जाति प्रथा, विधवा विवाह, वेश्यावृत्ति, मद्यपान आदि समस्याओं पर नाटककारों ने अपनी नाटको के माध्यम से प्रहार किया। मलयालम में अन्धविश्वास, रूढीवादिता का विरोध तथा सामाजिक सुधार की तीव्र आकांक्षा मुखरित करनेवाले नाटककार हैं - वी.टी भट्टतिरिप्पाड, एम, पी. भट्टतिरिप्पाड और के. दामोदरन। उनकी सफलतम रचनाये हैं - अटुक्कलयिल निन्नुम अरंगतेक्कु, ऋतुमती और पाट्टबाकी आदि। हिन्दी में समाज सुधार की दृष्टि से राधाकृष्ण की ''दुखिनीबाला'', देवीप्रसाद का 'बालविवाह' और श्यामसुन्दरदास का'' 'वृद्धावस्था' आदि।

२० वीं शताब्दी के तीसरे दशक के बाद आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवाद की प्रवृत्ति बढ़ी, सुधारवादी दृष्ठिकोण कम होता गया। इसका कारण था कि भारतीय नाटकों पर अब इब्सन के समस्यामूलक नाटकों का प्रभाव बढता गया। नाटक के विषय है पति-पत्नी, पिता-पुत्र आदि के संबंन्ध होने लगे। मलयालम में एन. कृष्ण पिल्लै ने नाटकों में भाषा की कृत्रिमता, स्वकथन, लम्बै संवाद आदि को हटाकर तथा प्रदर्शन को यथार्थवादी बनाकर नाटक को जीवन के अधिक निकट लाने का सफल प्रयास किया। इसलिए उन्हें मलयाम का 'इब्सेन' कहा जाता है। उनके सफल नाटक हैं - भग्नभवनम्, कन्यका, बलाबलम, अनुरंजन और मुटक्कुमुतल आदि। इस समय के अन्य नाटककारों के नाम इस प्रकार के हैं - के सुरेन्द्रन (बली) जी. शंकर पिल्लै (स्नेहदूतम) तथा सी.एन. श्रीकण्ठन (नष्टकच्चवटम) आदि। इन सभी नाटककारों ने आज के जीवन में व्यक्ति के घुटन, संग्रास, अवसाद और अन्तःपीडा का चित्रण किया है। हिन्दी में जयशंकर प्रसाद (ध्रुवस्वामिनी) हरिकृष्ण प्रेमी (स्वप्न भंग) लक्ष्मी नारायण मिश्र (सिन्दूर की होली) गोविन्द वल्लभ पन्त (अंगुर की बेटी) और उपेन्द्रनाथ अश्क (अंजोदीदी) के नाटकों पर फ्रायड और इब्सन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है।

स्वाधीनता के बाद भी पौराणिक नाटक लिखे गए थे। किन्तु इन नाटकों का उद्देश्य अब मनोरंजन था भावमग्न करना नहीं था। इनके द्वारा मनुष्य की जटिल मनोदशा एवं मनोग्रन्थियों का विश्लेषण किया गया। मनलयालम में इस तरह के मनोवैज्ञानिक नाटककार सी.एन.श्रीकण्ठन नायर ने अपने नाटकों में पॉराणिक प्रसंगों और पात्रों को पुनर्रचित करके नये विचार और नयी जीवन दृष्टि दी है।

शमायण पर आधारित तीन नाटकों में लेखक का आधुनिक युगबोध स्पष्ट है। नाटकों के नाम इस प्रकार के है - ''लंका लक्षमी, कांचन सीता और साकेतम आदि। जी. शंकर पिल्लै के 'धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र'' (१९६८) में महाभारत युद्ध के बाद स्त्रियों की मानसिक दशा का विश्लेषण है। हिन्दी में धर्मवीर भारती के 'अन्धायुग' में धृतराष्ट्र-गान्धारी और अश्वत्थामा के माध्यम् से लेखक ने आज के जीवन के गासदी संशय आतंक को उजागर किया है। सुरेन्द्र वर्मा के 'द्रौपदी' में समकालीन परिवारों की त्रासदी है। नरेन्द्र कोहली के 'शंबूक की हत्या' में राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त चरित्रहीनता का वर्णन किया है।

स्वाधीनता के पश्चात् समकालीन समस्याओं पर नाटक लिखे गए। मलयालम के सदानन्दत ने अपने नाटक 'अग्निपुत्री' में पुरुष द्वारा सताई गई स्त्री को संघर्ष करते हुए। अन्त में उसे अपनी गरिमा मर्यादा बनाये रखने में सफल होते दिखाया। हिन्दी में भगवती चरण वर्मा के ''पृथ्वी का स्वर्ग'' में साँप्रदायिक परिवेश, समकालीन व्यक्ति की यंत्रण, शासनसत्ता, व्यवस्था, राजनीति और काली पूँजी के प्रति बसनेवाली मानवहंता शक्तियों का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार कह सकते है कि स्वतन्त्रता के बाद पृथ्वी पर स्वर्ग के उतरते की जो सँभावनाएँ की गयी थी, लेकिन इन पर हिमपात होगपा है और फिर वे जलकर राख हो रही है।

सन १९६० के बाद हिन्दी और मलयालम के नाटको में युवक और युवतियों के मानसिक संघर्ष एवं उनके हृदय में उठनेवाले भावनाओं का सजीव चित्र देखने को मिलता है। हिन्दी के नाटकों यें जीवन मूल्यों में होनेवाले परिवर्तन, परम्परागत

मान्यताओं के ढहने, अनेक पात्रों के मानसिक तनाव और अर्थद्वन्द्व को गहराई से पकडने की चेष्टा की गई है। उल्लेखनीय नाटककार हैं - मोहन राकेश (आधे - अधूरे १९६९), लक्ष्मीनारायण लाल (अन्धा कुआ १९५५ - ५६) सुरेन्द्रवर्मा, मणि मधुकर, रमेश बक्षी, विष्णु प्रभाकर, सुरेन्द्र चोपडा, सुरेन्द्रतिवारी, शंकर शेष (एक ओर द्रोणाचार्य) भीष्म साहनी (हानूश) आदि। इन नाटकों में अधिकतर प्रतीकार्मक नाटक हैं। मलयालम के एन.एन पिल्लै के ''मरणनृत्यम' (१९६७) को एकतर्ड नाटक कहा जाता है। शंकर पिल्लै के 'बन्दी' में थियेटर ऑफ क्रुअलटी' के तत्व हैं। नाटकों में प्रतीकात्मकता है। नारायण पिल्ले के प्रसिद्ध नाटक है ''प्रलयम''। इसमें भी प्रतीकों का कराल प्रयोग हुआ है। हिन्दी और मलयालम में लोकनाट्य शैली के तत्व अपनाकर नाटकों को अभिनव रूप दिया गया। हिन्दी में मणि मधुकर की रचना ''खेला पॉलमपुर'' में लोकनाट्य शैली का प्रयोग किया गया है। धर्मवीर भारती के 'अन्धायुग' में भी लोकनाट्य शैली के कुछ तत्वों का प्रयोगक लोकप्रिय बनाया गया है। इस नाटक में प्रतीकों का प्रयोग है। मालयालम के प्रसिद्ध नाटककार कावालम् नारायण पणिक्कर ने देशी नाटकों नाटक के तत्वों का प्रयोग किया। उनके नाटक ''अवनवन कटम्प'' का मुख्य आकर्षण है 'कोंकार' आदिवासी जाति द्वारा अभितीत नाटकों का शिल्प।

हिन्दी और मलयालम में अनेक एकांकी भी लिखे गये हैं। हिन्दी का प्रथम एकांकीकार है जयशंकर प्रसाद। एकांकी का नाम है (एक धूँट-१९२९)। वह प्राचीन रूपक से अधिक निकट है। भुवनेश्वर के एकांकियों पर इब्खन का प्रभाव है। रामकुमार वर्भा वे एकांकी को समृद्ध बनाने में अथह परिश्रम की। प्रसिद्ध एकांकीकारों के नाम इस प्रकार के हैं - उपेन्द्रनाथ अरक जगदीश चन्द्र,

लक्ष्मीनारायण लाल, देवराज दिनेश, रेवती शरण वर्मा आदि। मलयालम में एकांकी नाटक को प्रोत्साहन नहीं मिला। अतः वहाँ एकाँकी कम संख्या में ही लिखे गए हैं।

हिन्दी और मलयालम में रेडियो से प्रसारित होनेवाले लधु नाटक भी लिखे गए हैं। हिन्दी में रेडियों से जुड़े साहित्यकारों में रेवतीशरण शर्मा, देवराज दिनेश और सुमित्रानन्दन पन्त आदि है। मलयालम के रेडियो रूपक साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध नहीं हुए। फिर भी कुछ नाटकों जैसे 'तरंगरंगम' (एस. के नायर) तथा रावण और भरतन (रामकृष्ण पिल्लै), पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके है। रेडियो से प्रकाशित होनेवाले नाटकों का प्रमुख उद्देश्य जो है धन तथा प्रसिद्धि। हिन्दी और मलयालम के अधिकांश नाटकों के विषय एक जैसे लेकिन लेखकों के अलग-अलग दृष्टिकोण और भाषा तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से ये नाटक एक दूसरे से भिन्न है ।

सहायक ग्रन्थ सूची

। हिंदी और मलयालम के समस्या नाटक - सुधांशु चतुर्वेदी

२ केरल के हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास - डा एन चंद्रशेखरन नायर